वीध्र (r. इन्ध् praef. वि s. र ejectâ nasali) clarus, purus. Am.

वीर् 10. *A.* (विक्रान्तौ *K.* शौर्ये *V.*; ut videtur, Denom. a वीर) fortem esse, fortitudinem, potentiam ostendere. Rigv. 116. 5.: तद् अवीरयेथाम् ... अश्विना «illud potentiae specimen dedistis, Asvini!»

वीर 1) *m.* (fortasse e वार a वृ cl. 10. वारयामि arceo) heros. Dr. 2. 7. 2) *n.* arundo.

वीरण *n.* gramen fragrans (Andropogon muricatum). Am.

वीरिणी *f.* (a praec. s. इन् in *fem.*) nomen fluminis. M. 5.

वीरुध् *f.* (primitiva forma radicis रुह् crescere q. v. praef. वि, producto इ) planta repens. Ur. 31. 4.

वीर्य *n.* (a वीर s. य) vis, robur, fortitudo. In. 4. 8. H. 1. 4.

वीर्यवत् (a praec. s. वत्) vi *vel* fortitudine praeditus.

वुङ् 1. *P.* (त्यागे; scribitur वुग्, gr. 110[a].) relinquere.

वुण्ट् 10. *P.* (हिंसायाम् *K.*; scribitur वुट्, gr. 110[a].) perire. *Cf.* विण्ट्, बुट्.

1. **वृ** 5. *P. A.* वृणोमि वृण्वे. 1) tegere. A. 8. 5.: नभसः प्रच्युता धाराः ... अवृण्वन् सर्वतो व्योम; 3. 25.: अवृणोन् माम् महाशरैः. — वृत tectus. N. 12. 112. 2) circumdare. N. 13. 49.: जनैर् वृताम्; Mah. 1. 5120. 3) eligere. Mah. 2. 2698.: अवृणोत् ... पाण्डवानाम् अदासताम्; Dev. 11. 36.: वरं यम् मनसे ’च्छथ तं वृणुध्वम्. — *Caus.* tegere. Man. 8. 239.: छिद्रञ्च वारयेत् सर्वम्. Vid. 3. वृ. (Cum वृ i. e. वर् tegere, circumdare cf. वल्, lat. *vallum, vallis,* fortasse *velum,* nisi pertinet ad चेल q. v.; *villus, ap-erio, op-erio,* v. praeff. अप, अपि; lith. *at-weru* aperio, *uź-weru, sù-weru* claudo; gr. *ῥι-νός,* aeol. *γρῖ-νος* e *Ϝρῖ-νος* cutis, *ῥι-νόν* scutum - v. वर्मन् - *εἶρ-ος, εἴριον* etc. lana; lith. *wil-na* id.; russ. *vólna* id.; goth. *vulla* id.; germ. vet. *wolla* id., *wilôn* velare; (v. ऊर्णा); hib. *filim* «I fold, plait, lap, wrap, involve», *fillead* «a fold, plait, a cloth», *falach* «a blanket, veil, covering», *olann* lana. De वृ eligere v. वर् p. 309.)

c. अप aperire. Rigv. 51. 3. et 4.: अवृणोर् अप. (Huc, vel potius ad Caus. अपवारयामि trahi potest lat. *aperio,* ita ut correptum sit ex *apa-verio,* v. Pott. I. 225.)

c. अपि abscondere. Rigv. 121. 4.: अपीवृत. (Lat. *operio* correptum ex *opi-verio* = Caus. अपिवारयामि, v. Pott. I. 225.)

c. आ 1) tegere. Mah. 1. 1296.: नीलजीमूतसङ्घातैः सर्वम् अम्बरम् आवृणोत्; Bh. 3. 38.: धूमेना ’व्रियते वह्निः. 2) circumdare. N. 1. 24.: सखीगणावृता.

c. आ praef. अप aperire. Bh. 2. 32.: स्वर्गद्वारम् अपावृतम्.

c. आ praef. प्र tegere. N. 12. 23.: वस्त्रार्धप्रावृताम्. Induere, *c. acc. vestis.* N. 24. 42.: वस्त्रम् अरजः प्रावृणोत्; Mah. 1. 2033.: प्रावृत्य कृष्णावासांसि.

c. आ praef. वि arcere. Mah. 3. 363.: व्यावृत्य राजानम्.

c. आ praef. सम् 1) tegere. N. 9. 14. Bh. 16. 16. 2) claudere. Mah. 1. 8343.: त इमे प्रसवस्या ’र्थे तव लोकाः समावृताः. 3) arcere, impedire. Mah. 3. 10329.: शक्रन्मूत्रे समावृणोत्.

c. परि circumdare. In. 1. 13.: शक्रः परिवृतो देवैः.

c. प्र 1) induere *vestem.* Mah. 3. 2977.: वस्त्रम् प्रावृणोत्. 2) eligere. Mah. 3. 17186.: प्रवृणुते वरम्.

c. वि 1) aperire. Mah. 1. 6275.: विवृत्य नयने; 12931.: निसृतः ... मुखात् तस्य विवृतात्; 1. 2935.: मारुतस् तत्र वासः प्रक्रीडितायाः विवृणोतु. — विवृत nudus. Mah. 1. 2942.: अपश्यद् विवृताम्. *Trop.* detegere, patefacere, manifestum facere. Mah. 2. 6952.: नचै ’तद् विवृणोति सः. 2) petere. Mah. 1. 4413.: तान् तु तेजस्विनीङ् कन्याम् ... व्यवृण्वन् पार्थिवाः केचित्.

c. सम् tegere. N. 16. 17. In. 5. 19.

c. सम् praef. अभि *id.* H. 4. 40.

2. **वृ** 9. *P. A.* वृणामि, वृणे. Eligere. N. 4. 14.: वृणे त्वाम् अहम् भर्तारम्; Su. 1. 22.: अन्यद् वृणीतम्; Mah. 1. 3391.: वृण वरम् (v. gr. min. ed. 2. §. 345[b].); 3. 8567.: तां न वव्रे पुरुषः. 2) *A.* desiderare, optare. R. Schl. II. 34. 40.: अपक्रमणम् एवा ’थ सर्वकामैर् अहं वृणे.